भारतीय अर्थव्यवस्था की संरचना व विषेशताएं–

आज़ादी के बाद से भारत एक मिश्रित अर्थव्यवस्था रहा है। भारतीय अर्थव्यवस्था मूल रूप से सेवा क्षेत्र के योगदान पर आधारित है (वर्तमान में सकल घरेलू उत्पाद का 60 प्रतिशत हिस्सा प्रदान करता है) और इसकी लगभग 53प्रतिशत आबादी कृषि पर निर्भर है। भारत के बड़े सार्वजनिक क्षेत्र देश को मिश्रित अर्थव्यवस्थाश की स्थिति प्रदान करने के लिए जिम्मेदार थे। जैसे–जैसे समय बीत रहा है, कृषि की हिस्सेदारी घटती जा रही है और सेवा क्षेत्र की हिस्सेदारी बढ़ती जा रही है। वर्तमान समय में भारत को विश्व की विकासशील अर्थव्यवस्था कहा जाता है।

भारतीय अर्थव्यवस्था की प्रकृति

1. आजादी के बाद से भारत एक **मिश्रित अर्थव्यवस्था** रहा है। भारत के बड़े सार्वजनिक क्षेत्र अर्थव्यवस्था को रोजगार और राजस्व प्रदान करने के लिए जिम्मेदार थे।

2. डब्ल्यूटीओ के अनुमान के अनुसार वैश्विक निर्यात और आयात में भारत की हिस्सेदारी 2000 में क्रमशः 0.7प्रतिशत और 0.8 प्रतिशत से बढ़कर 2012 में 1.7 प्रतिशत और 2.5 प्रतिशत हो गई।

3. भारतीय अर्थव्यवस्था का अवलोकन स्वतंत्रता के बाद सोवियत संघ की प्रथाओं से अत्यधिक प्रेरित था। 1980 के दशक तक इसकी विकास दर पाँच से अधिक नहीं दर्ज की गई थी। इस स्थिर विकास दर को कई अर्थशास्त्रियों ने **हिन्दू विकास दर** की संज्ञा दी थी।

4. 1992 में, देश में उदारीकरण शासन की शुरुआत हुई। इसके बाद अर्थव्यवस्था ऊपर की ओर बढ़ने लगी। विकास की इस नई प्रवृत्ति को **न्यू हिंदू ग्रोथ रेट** कहा गया।

5. भारत की विविध अर्थव्यवस्था में पारंपरिक ग्रामीण खेती, आधुनिक कृषि, हस्तशिल्प, आधुनिक उद्योगों की एक विस्तृत श्रृंखला और सेवाओं की एक विस्तृत श्रृंखला शामिल है।

6. सेवाएँ आर्थिक विकास का प्रमुख स्रोत हैं, जो एक तिहाई से भी कम श्रम शक्ति के साथ भारत के आधे से अधिक उत्पादन के लिए जिम्मेदार हैं।

DR. DINESH K GUPTA: Astt. Prof. Dept of Economics, Rajkiya Mahavidyalaya Amori (Champawat)

वर्तमान विश्लेषण

1. वर्तमान जीडीपी कारक लागत (2004–05 की कीमतों पर) रु. 5748564 करोड़ (2013–14)

2. प्रति व्यक्ति आय (मौजूदा कीमतों पर) रु. 74920 (2013–14)

3. 2–11–12 के लिए सकल घरेलू बचत दर (जीडीपी के रूप में मौजूदा बाजार मूल्य पर) 30.8 प्रतिशत है

4. तृतीयक क्षेत्र सकल घरेलू उत्पाद (2012–13) में 56 प्रतिशत योगदान देता है।

5. कुल खाद्यान्न उत्पादन 265 मिलियन टन (2013–14) है।

6. विश्व निर्यात में भारत की हिस्सेदारी कुल व्यापार का 1.8 प्रतिशत है।

7. विश्व के कुल आयात में भारत की हिस्सेदारी 2.5 प्रतिशत है.

8. भारतीय जनसंख्या का कुल आकार 1.26 बिलियन (2014) है।

9. अमेरिका और चीन को पछाड़ते हुए, भारत ने कैलेंडर 2015 की पहली छमाही में सभी देशों के बीच नई परियोजनाओं के लिए सबसे अधिक एफडीआई प्रवाह देखा। शुरुआत में, भारत ने पूंजीगत व्यय में पिछले साल की पहली छमाही में + 12 बिलियन के मुकाबले + 31 बिलियन आकर्षित किया। विदेशी कंपनियों से, जबकि चीन और अमेरिका ने इसी अवधि में क्रमशः +28 बिलियन और +27 बिलियन का निवेश आकर्षित किया।

10. 2015 में भारत के विदेशी मुद्रा भंडार का कुल आकार 330 अरब डॉलर है।

11. वैश्विक मांग में मंदी के कारण अगस्त 2015 में शीर्ष पांच क्षेत्रों – इंजीनियरिंग, पेट्रोलियम, रत्न और आभूषण, कपड़ा और फार्मास्यूटिकल्स – का निर्यात लगभग 25 प्रतिशत गिरकर 13.33 बिलियन डॉलर हो गया। 2014–15 में देश के कुल व्यापारिक निर्यात में इन पांच क्षेत्रों का योगदान लगभग 65 प्रतिशत था। पिछले साल अगस्त में इन क्षेत्रों का निर्यात 17.79 अरब डॉलर रहा था.

12. **गरीबी का आकलन–**

रंगराजन पैनल की सिफ़ारिश (जो लोग ग्रामीण इलाकों में एक दिन में 32 रुपये और कस्बों और शहरों में 47 रुपये खर्च करते हैं उन्हें गरीब नहीं माना जाना चाहिए) के परिणामस्वरूप गरीबी रेखा से नीचे

DR. DINESH K GUPTA: Astt. Prof. Dept of Economics, Rajkiya Mahavidyalaya Amori (Champawat)

की आबादी में वृद्धि हुई है, जो 2011 में 363 मिलियन होने का अनुमान है। –12, तेंदुलकर फॉर्मूले पर आधारित 270 मिलियन अनुमान की तुलना में – लगभग 35 प्रतिशत की वृद्धि।

द्वितीय, इसका मतलब यह है कि भारत की 29.5 प्रतिशत आबादी रंगराजन समिति द्वारा परिभाषित गरीबी रेखा से नीचे रहती है, जबकि तेंदुलकर के अनुसार यह 21.9 प्रतिशत है। 2009–10 के लिए, रंगराजन ने अनुमान लगाया है कि कुल जनसंख्या में बीपीएल समूह की हिस्सेदारी 38.2 प्रतिशत थी, जिससे दो साल की अवधि में गरीबी अनुपात में 8.7 प्रतिशत अंक की गिरावट आई।

भारतीय अर्थव्यवस्था एक मिश्रित अर्थव्यवस्था (सार्वजनिक और निजी क्षेत्र का संयोजन) है। वर्तमान में भारत को अपनी प्रकृति के कारण दुनिया की सबसे विकासशील अर्थव्यवस्थाओं में से एक माना जाता है। कुल सकल घरेलू उत्पाद में कृषि का हिस्सा घट रहा है, सेवा क्षेत्र का हिस्सा बढ़ रहा है या साल–दर–साल सकल घरेलू उत्पाद में तृतीयक क्षेत्र का योगदान बढ़ रहा है।

भारत की अर्थव्यवस्था के लिए 2023 का साल बहुत अच्छा रहा। इस साल भारत की अनुमानित विकास दर 6.3 प्रतिशत रहने का अनुमान लगाया गया है, जबकि दुनिया की औसत विकास दर केवल 2.9 फ़ीसद रही थी. आज जब भारत 2027 तक 5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनने की तैयारी कर रहा है, तो इसकी प्रगति के पीछे के अहम कारणों के साथ साथ दूसरे प्रमुख मानकों की पड़ताल करना ज़रूरी हो जाता है। इनमें से कुछ पैमाने महंगाई दर, बेरोज़गारी, निवेश, हर सेक्टर का प्रदर्शन और ख़ास तौर से टिकाऊ विकास के मानक पर प्रदर्शन के हैं. इन सूचकांकों की एक समीक्षा की गई है, ताकि भारत की अर्थव्यवस्था की ताक़त को पहचाना जा सके और उन प्रयासों को उजागर किया जा सके, जिन्हें 2024 में भी अपनाने की ज़रूरत होगी।

भारत–एक अल्पविकसित अर्थव्यवस्था के रूप में**---**

1. प्रति व्यक्ति वास्तविक आय कम–

भारत विश्व में कम प्रति व्यक्ति आय वाले देश के रूप में जाना जाता है। प्रति व्यक्ति आय को जनसंख्या पर राष्ट्रीय आय के अनुपात के रूप में परिभाषित किया गया है। यह एक वर्ष में भारतीय नागरिक की औसत कमाई के बारे में जानकारी देता है, भले ही यह प्रत्येक व्यक्ति की वास्तविक कमाई को प्रतिबिंबित नहीं करता हो। वर्ष 2012–2013 के लिए भारत की प्रति व्यक्ति आय 39,168 अनुमानित है। यह लगभग 3,264 प्रति माह बैठता है। अगर हम भारत की प्रति व्यक्ति आय की तुलना दुनिया के अन्य देशों से करें तो पता चलता है कि भारत उनमें से कई देशों से काफी पीछे है। उदाहरण के लिए,

अमेरिका की प्रति व्यक्ति आय भारत से 15 गुना अधिक है जबकि चीन की प्रति व्यक्ति आय भारत से तीन गुना अधिक है।

2. उच्च जनसंख्या वृद्धि दर–

चीन के बाद भारत दुनिया का दूसरा सबसे बड़ी आबादी वाला देश है। 2011 की जनगणना के अनुसार भारत की जनसंख्या 121 करोड़ से अधिक है। 1990–2001 के दौरान इसमें 1.03 प्रतिशत की दर से वृद्धि हुई। भारत की जनसंख्या में तेजी से वृद्धि का मुख्य कारण मृत्यु दर में तेज गिरावट है जबकि जन्म दर में उतनी तेजी से कमी नहीं आई है। मृत्यु दर को प्रति हजार जनसंख्या पर मरने वाले लोगों की संख्या के रूप में परिभाषित किया गया है जबकि जन्म दर को प्रति हजार जनसंख्या पर जन्म लेने वाले लोगों की संख्या के रूप में परिभाषित किया गया है।

2010 में, जन्म दर प्रति एक हजार जनसंख्या पर 22.1 व्यक्ति थी जबकि मृत्यु दर प्रति एक हजार जनसंख्या पर केवल 7.2 व्यक्ति थी। वास्तव में यह विकास का संकेत है। कम मृत्यु दर बेहतर सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रणाली को दर्शाती है। लेकिन उच्च जन्म दर एक समस्या है क्योंकि यह सीधे तौर पर जनसंख्या वृद्धि को बढ़ावा देती है। 1921 के बाद भारत की जनसंख्या बहुत तेजी से बढ़ी क्योंकि जन्म दर में बहुत धीमी गति से गिरावट आई जबकि मृत्यु दर में बहुत तेजी से गिरावट आई। 1921 में जन्म दर 49 से घटकर 2010 में 22.1 हो गई, जबकि इसी अवधि के दौरान मृत्यु दर 49 से घटकर 7.2 हो गई। अतः भारत में जनसंख्या वृद्धि बहुत तेजी से हुई। भारी जनसंख्या दबाव भारत के लिए चिंता का एक बड़ा कारण बन गया है। इसने सार्वजनिक शिक्षा, स्वास्थ्य देखभाल, बुनियादी ढाँचा आदि प्रदान करने के लिए पर्याप्त संसाधन जुटाने के लिए सरकारी खजाने पर बोझ डाला है।

3. **प्राथमिक क्षेत्र पर निर्भरता–**

जब भारत जैसे विकासशील देशों में लोगों को नई नौकरी के अवसर उपलब्ध नहीं होते हैं, तो लोगों को आय के लिए प्राथमिक क्षेत्रों की ओर रुख करना पड़ता है। इन क्षेत्रों में वे व्यवसाय शामिल हैं जो लोग सदियों से करते आ रहे हैं जैसे कृषि, पशु प्रजनन आदि। ये क्षेत्र उन्हें उतना पैसा नहीं दिलाते जितना विकसित देशों के अन्य क्षेत्र। इसलिए, प्राथमिक क्षेत्रों पर निर्भरता के कारण भारतीय अर्थव्यवस्था कमजोर हो गई है।

4. अत्यधिक गरीबी का स्तर–

भारत सरकार की रिपोर्ट के अनुसार, 2011–12 में भारत में लगभग 269.3 मिलियन लोग गरीब थे। यह भारत की जनसंख्या का लगभग 22 प्रतिशत था। एक व्यक्ति को गरीब कहा जाता है यदि वह ग्रामीण क्षेत्र में न्यूनतम 2400 और शहरी क्षेत्र में 2100 कैलोरी प्राप्त करने के लिए आवश्यक मात्रा में भोजन का उपभोग करने में सक्षम नहीं है। इसके लिए व्यक्ति को भोजन सामग्री खरीदने के लिए आवश्यक धनराशि भी अर्जित करनी होगी। सरकार ने यह भी अनुमान लगाया है कि धन की आवश्यक राशि ग्रामीण क्षेत्र में 816 रुपये और शहरी क्षेत्र में प्रति व्यक्ति प्रति माह 1000 रुपये है। यह ग्रामीण क्षेत्र में लगभग 28 और शहरी क्षेत्र में 33 प्रति व्यक्ति प्रति दिन बैठता है। इसे गरीबी रेखा कहा जाता है. इसका मतलब यह है कि 2011–12 में भारत के 26.99 करोड़ लोग इतनी कम रकम नहीं कमा पा रहे थे। 2018 में, दुनिया के लगभग 8प्रतिशत श्रमिक और उनके परिवार प्रति दिन प्रति व्यक्ति 1.90 अमेरिकी डॉलर (अंतर्राष्ट्रीय गरीबी रेखा) से कम पर जीवन यापन करते थे। गरीबी आय और धन वितरण में असमानता के साथ आती है। भारत में बहुत कम लोगों के पास सामग्री और संपत्ति है, जबकि अधिकांश लोगों के पास भूमि स्वामित्व, घर, सावधि जमा, कंपनियों के शेयर, बचत आदि के मामले में न के बराबर या बहुत कम संपत्ति पर नियंत्रण है। भारत में केवल शीर्ष 5 प्रतिशत परिवारों का कुल संपत्ति के 38 प्रतिशत पर नियंत्रण है, जबकि निचले 60 प्रतिशत परिवारों का केवल 13 प्रतिशत संपत्ति पर नियंत्रण है। यह आर्थिक शक्ति के बहुत कम हाथों में केन्द्रित होने का संकेत देता है। गरीबी से जुड़ा एक और मुद्दा बेरोजगारी की समस्या है। भारत में गरीबी का सबसे महत्वपूर्ण कारण यह है कि देश की श्रम शक्ति में शामिल सभी व्यक्तियों के लिए नौकरी के अवसरों की कमी है। श्रम बल में वे वयस्क व्यक्ति शामिल होते हैं जो काम करने के इच्छुक होते हैं। यदि हर वर्ष पर्याप्त संख्या में नौकरियाँ पैदा नहीं होंगी तो बेरोजगारी की समस्या बढ़ेगी। भारत में जनसंख्या में वृद्धि, शिक्षित लोगों की संख्या में वृद्धि, औद्योगिक और सेवा क्षेत्र का अपेक्षित गति से विस्तार न होना आदि कारणों से हर साल बड़ी संख्या में लोग श्रम शक्ति में जुड़ते हैं।

5. भारतीय अर्थव्यवस्था पर कोविड 19 का प्रभाव

पूरी दुनिया में कोविड महामारी के कारण हुई जानमाल की हानि के साथ–साथ, कोविड–19 के कारण विभिन्न देशों की अर्थव्यवस्था को भी भारी झटका लगा है। भारतीय अर्थव्यवस्था के लगभग सभी क्षेत्रों ने कोविड–19 के प्रतिकूल प्रभाव का अनुभव किया है। भारत के सांख्यिकी मंत्रालय के अनुसार, वित्तीय वर्ष 2020 में भारत की जीडीपी या सकल घरेलू उत्पाद 3.1प्रतिशत तक नीचे चला गया।

वित्त वर्ष 2021 में दूसरी तिमाही के दौरान करीब 24 प्रतिशत के सबसे बड़े जीडीपी संकुचन ने भारतीय अर्थव्यवस्था को हिलाकर रख दिया. अल्ट्राटेक सीमेंट, टाटा मोटर्स, आदित्य बिड़ला समूह जैसे प्रमुख

DR. DINESH K GUPTA: Astt. Prof. Dept of Economics, Rajkiya Mahavidyalaya Amori (Champawat)

भारतीय उद्योगों ने या तो अपना परिचालन काफी कम कर दिया या अस्थायी रूप से बंद हो गए। देशव्यापी लॉकडाउन और कर्फ्यू के कारण कई छोटे उद्योगों को भी बंद करना पड़ा। इससे भारतीय अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों पर काफी प्रभाव पड़ा। इन सबके साथ–साथ सरकार को दो चरणों में देश में सभी को मुफ्त टीकाकरण की आपूर्ति भी करनी थी। ये सारा पैसा सरकार के बजट से आया था. इसलिए, सरकार की आय काफी कम हो गई थी, लेकिन सरकार को इस तरह के अतिरिक्त खर्चों को उठाना पड़ा। फल्म थिएटर, पर्यटन इत्यादि जैसे मनोरंजन उद्योगों को पूरी तरह से बंद करना पड़ा, और उनसे कोई राजस्व उत्पन्न नहीं हुआ – यह काफी हद तक भारतीय अर्थव्यवस्था का नुकसान था।

निष्कर्ष

भारत विकासशील देशों में है, विकासशील देशों की अर्थव्यवस्था ज्यादातर प्राथमिक क्षेत्रों पर निर्भर करती है, जो कृषि, पशु प्रजनन, मछली पकड़ने आदि जैसी गतिविधियों से बनी होती हैं। भारतीय अर्थव्यवस्था की विशेषताओं में कम प्रति व्यक्ति वास्तविक आय दर, जनसंख्या वृद्धि की उच्च दर और निर्भरता शामिल हैं। कोविड 19 ने भारतीय अर्थव्यवस्था पर प्रतिकूल प्रभाव डाला था। कोविड महामारी के कारण उद्योग बंद हो गए और उसके बाद बेरोजगारी हुई। इसके कारण, भारतीय अर्थव्यवस्था को वित्तीय वर्ष 2021 की दूसरी तिमाही के दौरान लगभग –24प्रतिशत के सबसे बड़े सकल घरेलू उत्पाद संकुचन का सामना करना पड़ता है।

****

DR. DINESH K GUPTA: Astt. Prof. Dept of Economics, Rajkiya Mahavidyalaya Amori (Champawat)